मेरा नाम है कोजेविन येव्गेनी। इस समय मैं शांति पूर्वक ओशो इंटरनैशनल मेडिटेशन रिज़ार्ट में बैठा हूं लेकिन ऐसा करने के लिए मुझे बहुत कुछ भुगतना पड़ा है।

मैं ब्लैक सी फ्लीट का अध्यक्ष था और एडमिरल के पद पर था। मुझे समय-समय पर कुछ लोगों ने ओशो किताबें पढ़ने को दी थीं लेकिन मैं केवल एक किताब पढ़ सका और वह थी "हियर एण्ड नाऊ"। मुझे वह बेहद पसंद आई।

सन 2008 में मुझे प्रॉसिक्युटर जनरल के ऑफिस ने मेरे राजनैतिक संबंधों के कारण गिरफ्तार किया । मैं युक्रेन के अध्यक्ष के विरोधी पक्ष का सदस्य था।

मुझे राजधानी किएव के ल्युकानिएस्का कैदखाने में डाल दिया गया, एक महीने तक मौत की कोठरी में रखा गया और भयंकर मानसिक यातनाएं दी गईं। साथ ही मुझे पढ़ने के लिए विनम्रता और धीरज पर ईसाई साहित्य दिया गया जिसे पढ़ने से मैंने इन्कार किया। उसमें कोई दम नहीं था।

एक महीने के बाद मुझे एक छोटी सी कोठरी में भेजा गया जहां सिर्फ दो लोग रह सकते थे। मेरा साथी एक बहुत बड़े उद्योग का भूतपूर्व संचालक था। उसके पिता, जो सरकारी वकील थे, उसके लिए कम्प्यूटर द्वारा छपी हुई ओशो किताबें ले आते थे जिन्हें वे क्रिमिनल केस के कागजों में छिपाकर रखते थे। मेरे साथी ने ऐसी ही एक किताब मुझे दी: डैथ: दि ग्रेटेस्ट फिक्शन। जब मुझे पूछताछ के लिए ले जाया-गया तब मैंने क्रिमिनल केस के कागजों के बीच इस पुस्तक को रखा और दो घंटे का रास्ता इसे पढ़ते हुए काटा।

मुझे अचानक एक आंतरिक प्रकाश का अनुभव हुआ, मेरे भय पिघलने लगे। उस पूछताछ के दौरान मैं निश्चिन्त था, मुझे किसी तरह का भय नहीं लगा। मुझे उस स्थिति का बेतुकापन समझ में आया और जो हो रहा था उस पर एक आंतरिक हंसी उभरती हुई महसूस हुई। उसके बाद पूछताछ अधिकारी और वकील के बारे में मेरा रवैया बदल गया।

उसके बाद मैं नियमित रूप से ओशो की किताबें पढ़ने लगा जो मेरा साथी मुझे देता था। जेल के छह महीने के दौरान मैंने साठ किताबें पढ़ीं। और मैं वहीं पर सुरक्षा कैमेरा की निगाहों के सामने ध्यान करने लगा। जगह इतनी तंग थी कि मैं विपस्सना के अलावा कुछ कर नहीं सकता था।

छह महीने के बाद मैं रिहा हुआ और उसके एक साल बाद अदालत ने मुझे पूरी तरह बाइज्जत बरी कर दिया।

ओशो की हर किताब के पीछे ओशो इंटरनैशनल मेडिटेशन रिज़ार्ट की जानकारी होती है इसलिए मैं पुणे आना चाहता था। बल्कि यह मेरा सपना था। मैं जानना चाहता था कि मैं ध्यान विधियां सही कर रहा हूं या नहीं तथा मैं और भी बहुत सी ध्यान विधियों से परिचित होना चाहता था। जैसे ही मुझे अवसर मिला मैं पुणे आ पहुंचा। मेरा अनुभव है कि यह स्थान ओशो ध्यान का खजाना है। और वे इतने सही तरीके से किए जाते हैं-- एक के बाद एक, पूरे दिन भर। ध्यानियों के लिए तो यह महाभोज है।

मैं ध्यान के लिए भूखा था इसलिए जितने विभिन्न ध्यान मेरे से बन सके उतने मैंने किए। और एक चमत्कार घटा ! हो सकता है ध्यान की वर्षा से या फिर इस ऊर्जाक्षेत्र के प्रभाव से, या दोनों ही कारणों से, पांच दिन के सघन ध्यान प्रयोग के बाद मेरा सिगरेट पीना छूट गया। और मैं तैंतीस साल तक पी रहा था। मेरे अंदर एक हल्कापन था, एक नई शुद्धता थी। सिगरेट छूटने का यह असर हुआ कि दूसरे ही दिन मैंने संन्यास लिया। मेरा नया नाम है, रमाकान्त।

मैंने यहां आकर ओशो मल्टीवर्सिटी कोर्सेस भी किए। सबसे पहला था ओशो नो माइंड, और दूसरा था ओशो मिस्टिक रोज़ । मिस्टिक रोज़ के दूसरे चरण में सात दिन रोना होता है। मेरे लिए यह गहरा प्रतीक है क्योंकि आंसुओं के साथ मेरा अतीत भी बह जाएगा। शायद अब समय आ गया है कि मेरी गहराइयों में जो भी छिपा है उसे विदा किया जाए और जिंदगी की नई संभावनाओं के प्रति उपलब्ध हुआ जाए।

मैं बहुत धन्यभागी हूं कि यहां आ सका। अब नवम्बर **2013** में मैं अपनी पत्नी को लेकर वापिस आने वाला हूं।